कक्षा 6 | हिंदी (मल्हार)

अध्याय 2 : गोल (मेजर ध्यानचंद का संस्मरण)

अभ्यास वर्कशीट – सेट 1

नाम: _____ दिनांक: _____

कक्षा/सेक्शन: _____

खंड (अ) – बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: सही उत्तर चुनकर लिखिए।

1. **मेजर ध्यानचंद का जन्म कब हुआ था?**
   (क) सन 1902 में
   (ख) सन 1905 में
   (ग) सन 1908 में
   (घ) सन 1910 में

2. **ध्यानचंद का जन्म कहाँ हुआ था?**
   (क) झाँसी में
   (ख) प्रयाग में
   (ग) दिल्ली में
   (घ) पंजाब में

3. **ध्यानचंद किस उम्र में सेना में भर्ती हुए?**
   (क) 14 साल की उम्र में
   (ख) 15 साल की उम्र में
   (ग) 16 साल की उम्र में
   (घ) 18 साल की उम्र में

4. **ध्यानचंद किस रेजिमेंट में भर्ती हुए थे?**
   (क) पंजाब रेजिमेंट
   (ख) फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट
   (ग) सैंपर्स एंड माइनर्स
   (घ) सिख रेजिमेंट

5. **उनकी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर का नाम क्या था?**

CBSEClassWorksheets

(क) तिवारी

(ख) शर्मा

(ग) सिंह

(घ) वर्मा

6. **ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कब कहा जाने लगा?**

(क) सन 1933 में

(ख) सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में

(ग) सेना भर्ती के समय

(घ) सन 1940 में

7. **सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक के समय ध्यानचंद सेना में किस पद पर थे?**

(क) सूबेदार मेजर

(ख) लांस नायक

(ग) कैप्टन

(घ) साधारण सिपाही

8. **बर्लिन ओलंपिक में भारत को क्या मिला?**

(क) रजत पदक

(ख) कांस्य पदक

(ग) स्वर्ण पदक

(घ) कोई पदक नहीं

9. **सन 1933 की घटना में ध्यानचंद के सिर पर किसने हॉकी स्टिक मारी?**

(क) उनके अपने साथी खिलाड़ी ने

(ख) माइनर्स टीम के एक खिलाड़ी ने गुस्से में

(ग) रेफरी ने

(घ) किसी दर्शक ने

10. **उस घटना के बाद ध्यानचंद ने एक के बाद एक कितने गोल किए?**

(क) चार गोल

(ख) पाँच गोल

(ग) छह गोल

(घ) सात गोल

खंड (आ) – रिक्त स्थान भरें

CBSEClassWorksheets

निर्देश: नीचे दिए गए वाक्यों में उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा कीजिए।

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म सन _____ में प्रयाग में हुआ था।
2. बाद में ध्यानचंद का परिवार _____ आकर बस गया।
3. 16 साल की उम्र में ध्यानचंद _____ रेजिमेंट में सिपाही के रूप में भर्ती हुए।
4. उनकी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर का नाम _____ था।
5. सन 1936 में बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को _____ बनाया गया।
6. उस समय ध्यानचंद सेना में _____ थे।
7. बर्लिन ओलंपिक में भारत को _____ पदक मिला।
8. लोग ध्यानचंद को _____ कहने लगे।
9. ध्यानचंद की कोशिश रहती थी कि गोल करने का श्रेय उनके _____ को मिले।
10. ध्यानचंद के अनुसार हार या जीत उनकी नहीं बल्कि _____ की है।

खंड (इ) – सत्य/असत्य बताइए

निर्देश: निम्नलिखित कथनों के सामने 'सत्य' या 'असत्य' लिखिए।

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म सन 1904 में प्रयाग में हुआ था। (_____)
2. ध्यानचंद बचपन से ही हॉकी में बहुत रुचि रखते थे। (_____)
3. सूबेदार मेजर तिवारी ध्यानचंद को बार-बार हॉकी खेलने के लिए कहते थे।(_____)
4. सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को कप्तान बनाया गया था।(_____)
5. बर्लिन ओलंपिक में भारत को रजत पदक मिला था। (_____)
6. ध्यानचंद हमेशा खुद ही सारे गोल करने की कोशिश करते थे। (_____)
7. ध्यानचंद के अनुसार हार-जीत पूरे देश की होती है, उनकी अकेले की नहीं।(_____)
8. भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'खेल रत्न' ध्यानचंद के नाम पर है। (_____)
9. सेना में भर्ती होने के तुरंत बाद ही ध्यानचंद ने हॉकी में गहरी रुचि दिखाई।(_____)
10. राष्ट्रीय खेल दिवस ध्यानचंद के जन्मदिन पर मनाया जाता है। (_____)

खंड (ई) – दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए

1. **ध्यानचंद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

CBSEClassWorksheets

2. **ध्यानचंद किस उम्र में और किस रेजिमेंट में भर्ती हुए?**

3. **सूबेदार मेजर तिवारी ने ध्यानचंद को क्या करने के लिए प्रेरित किया?**

4. **सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को क्या जिम्मेदारी मिली?**

5. **लोगों ने ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' क्यों कहना शुरू किया?**

6. **ध्यानचंद की खेल भावना क्या थी?**

7. **बर्लिन ओलंपिक में भारत को क्या परिणाम मिला?**

8. **खेलते समय ध्यानचंद किस बात का ध्यान रखते थे?**

9. **भारत मेजर ध्यानचंद को किस प्रकार सम्मान देता है?**

CBSEClassWorksheets

10.**ध्यानचंद के अनुसार सफलता के मंत्र क्या हैं?**

खंड (उ) – संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-8 पंक्तियों में लिखिए।

1. **मेजर ध्यानचंद के प्रारंभिक जीवन और हॉकी से जुड़ने का वर्णन करें।**

2. **सन 1933 की घटना का वर्णन अपने शब्दों में करें कि ध्यानचंद ने किस प्रकार 'बदला' लिया।**

3. **ध्यानचंद की खेल भावना (टीम स्पिरिट) पर एक टिप्पणी लिखें।**

4. **'हॉकी का जादूगर' नाम मिलने की कहानी संक्षेप में लिखें।**

CBSEClassWorksheets

5. **भारत ध्यानचंद का सम्मान किस प्रकार करता है? विस्तार से लिखें।**

खंड (ऊ) – किसने किससे कहा?

निर्देश: निम्नलिखित कथनों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **"तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूंगा।" – यह बात किसने, किससे और कब कही?**

2. **"दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं।" – यह बात किसने किससे कही?**

3. **"लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।" – यह बात किसने और किस संदर्भ में कही?**

4. **"हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।" – यह विचार किसका है और किस बारे में कहा गया है?**

CBSEClassWorksheets

5. **ध्यानचंद का यह कहना कि वे गोल करने का श्रेय अपने साथी खिलाड़ी को दिलाना चाहते थे – यह विचार उन्होंने किसके बारे में और क्यों व्यक्त किया?**

खंड (ऋ) – संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर संदर्भ, प्रसंग और भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

1. **"बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है..." – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

---

2. **"...मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

---

3. **"हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

CBSEClassWorksheets

4. **“जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई।” – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

5. **“इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था।” – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

CBSEClassWorksheets

उत्तर कुंजी (Answer Key)

अभ्यास वर्कशीट – सेट 1

खंड (अ) के उत्तर

1. सन 1904 में [विकल्प (ख)]
2. प्रयाग में [विकल्प (ख)]
3. 16 साल की उम्र में [विकल्प (ग)]
4. फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट [विकल्प (ख)]
5. तिवारी [विकल्प (क)]
6. सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में [विकल्प (ख)]
7. लांस नायक [विकल्प (ख)]
8. स्वर्ण पदक [विकल्प (ग)]
9. माइनर्स टीम के एक खिलाड़ी ने गुस्से में [विकल्प (ख)]
10. छह गोल [विकल्प (ग)]

खंड (आ) के उत्तर

1. 1904
2. झाँसी
3. फर्स्ट ब्राह्मण
4. तिवारी
5. कप्तान
6. लांस नायक
7. स्वर्ण
8. 'हॉकी का जादूगर'
9. साथी खिलाड़ी
10. पूरे देश

खंड (इ) के उत्तर

1. सत्य

CBSEClassWorksheets

2. असत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. असत्य
6. असत्य
7. सत्य
8. सत्य
9. असत्य
10. सत्य

खंड (ई) के उत्तर

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म सन 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ था। बाद में उनका परिवार झाँसी आकर बस गया।
2. ध्यानचंद 16 साल की उम्र में 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हुए।
3. सूबेदार मेजर तिवारी बार-बार ध्यानचंद को हॉकी खेलने के लिए कहते थे, जिससे उनकी हॉकी में रुचि बढ़ी।
4. 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को भारतीय हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया, जबकि वे तब सेना में लांस नायक थे।
5. बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद के हॉकी खेलने के विशेष ढंग और कौशल से लोग इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें यह उपाधि दे दी।
6. ध्यानचंद की कोशिश रहती थी कि गेंद गोल के पास ले जाकर साथी खिलाड़ी को दें, ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिले।
7. बर्लिन ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम को स्वर्ण पदक मिला।
8. खेलते समय ध्यानचंद इस बात का ध्यान रखते थे कि हार या जीत उनकी अकेले की नहीं, बल्कि पूरे देश की है।
9. भारत उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाता है और भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'खेल रत्न' उनके नाम पर दिया जाता है।
10. ध्यानचंद के अनुसार लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।

CBSEClassWorksheets

खंड (उ) के उत्तर

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म सन 1904 में प्रयाग के एक साधारण परिवार में हुआ था। बाद में उनका परिवार झाँसी आकर बस गया। 16 साल की उम्र में वे 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गए। उनकी रेजिमेंट हॉकी में काफी प्रसिद्ध थी, पर शुरुआत में ध्यानचंद को हॉकी में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। उनके सूबेदार मेजर तिवारी बार-बार उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रेरित करते रहे। छावनी में अभ्यास का कोई निश्चित समय न होने के कारण सैनिक जब चाहें मैदान में जाकर अभ्यास कर लेते थे। धीरे-धीरे उनके खेल में सुधार आता गया और उन्हें सेना में तरक्की भी मिलती गई। इस तरह एक सामान्य सिपाही आगे चलकर विश्व-प्रसिद्ध खिलाड़ी बना।

2. सन 1933 में पंजाब रेजिमेंट और सैंपर्स एंड माइनर्स टीम के बीच एक मुकाबला हो रहा था। ध्यानचंद से गेंद न छीन पाने पर एक खिलाड़ी ने गुस्से में उनके सिर पर हॉकी स्टिक मार दी, जिससे उन्हें मैदान से बाहर ले जाया गया। पट्टी बँधवाकर ध्यानचंद फिर मैदान में लौटे और उस खिलाड़ी को बदला लेने की बात कही। यह सुनकर वह खिलाड़ी डर गया और हर पल ध्यानचंद को ही देखता रहा। इसी का फायदा उठाकर ध्यानचंद ने झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने पर उन्होंने उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और दोस्ताना ढंग से समझाया कि खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं होता। इस तरह उन्होंने हिंसा नहीं, बल्कि अपने खेल-कौशल से बदला लिया।

3. मेजर ध्यानचंद की सबसे बड़ी विशेषता उनकी उत्कृष्ट खेल भावना थी। हालांकि उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता था, फिर भी वे स्पष्ट करते हैं कि सारे गोल वे खुद नहीं करते थे। वे हमेशा गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को देने की कोशिश करते थे, ताकि गोल करने का श्रेय उस साथी को मिले। वे व्यक्तिगत यश से ज़्यादा टीम की सफलता को महत्व देते थे। उनका यह भी मानना था कि खेल में हार-जीत किसी एक खिलाड़ी की नहीं, बल्कि पूरी टीम और पूरे देश की होती है। इसी खेल भावना के कारण उन्होंने दुनिया भर के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।

4. सन 1936 में बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को भारतीय हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया, जबकि वे तब सेना में लांस नायक के पद पर थे। इस ओलंपिक में उनके हॉकी खेलने का ढंग इतना अद्भुत और कुशल था कि दर्शक और खिलाड़ी दोनों चकित रह गए। उनकी गेंद पर पकड़, तेज़ी और सटीक पास देने की कला से प्रभावित होकर लोगों ने उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। हालांकि वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि इसका मतलब यह नहीं था कि सारे गोल वे ही करते थे, बल्कि पूरी टीम के सहयोग से ही भारत ने स्वर्ण पदक जीता।

5. मेजर ध्यानचंद भारत के सबसे महान हॉकी खिलाड़ियों में से एक माने जाते हैं, इसलिए भारत उनका सम्मान कई तरीकों से करता है। उनके जन्मदिन को पूरे देश में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है, जिससे लाखों भारतवासी उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें। इसके अलावा,

CBSEClassWorksheets

भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'मेजर ध्यानचंद खेल रत्न' उनके नाम पर दिया जाता है, जो खेल जगत में सर्वोच्च उपलब्धि का प्रतीक है। ये सम्मान दर्शाते हैं कि ध्यानचंद का योगदान केवल खेल के मैदान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे पूरे देश के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गए।

खंड (ऊ) के उत्तर

1. यह बात मेजर ध्यानचंद ने उस विरोधी खिलाड़ी से कही, जिसने गुस्से में उनके सिर पर हॉकी स्टिक मारी थी। यह बात उन्होंने घायल होने के बाद पट्टी बाँधकर मैदान में लौटते ही कही।
2. यह बात मेजर ध्यानचंद ने मैच समाप्त होने के बाद उसी खिलाड़ी से कही, जिसने उन्हें हॉकी स्टिक से मारा था, और उसकी पीठ थपथपाते हुए कही।
3. यह बात मेजर ध्यानचंद ने उन सभी लोगों (बच्चों और बूढ़ों) से कही, जो उनसे उनकी सफलता का राज जानना चाहते थे।
4. यह विचार मेजर ध्यानचंद का अपना है, जिसे उन्होंने अपने पाठकों के साथ साझा किया है। यह बताता है कि खेलते समय वे हमेशा अपनी टीम और देश के सम्मान को सर्वोपरि रखते थे।
5. यह विचार मेजर ध्यानचंद ने अपनी खेल भावना और टीम भावना के बारे में व्यक्त किया, जिसमें वे यह स्पष्ट करते हैं कि वे साथी खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने में विश्वास रखते थे, न कि खुद ही सारे गोल करने में।

खंड (ऋ) के उत्तर

1. संदर्भ – यह पंक्ति 'गोल' नामक संस्मरण से ली गई है, जिसके लेखक मेजर ध्यानचंद हैं। प्रसंग – यह पंक्ति उस घटना के अंत में आती है जब एक खिलाड़ी ने ध्यानचंद को हॉकी से मारा था और बाद में ध्यानचंद के बदले से वह डर गया और शर्मिंदा हुआ। भावार्थ – इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति किसी के साथ बुरा व्यवहार करता है, वह हमेशा भयभीत रहता है कि उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार हो सकता है। यह पंक्ति हमें सिखाती है कि हमें कभी किसी के साथ गलत व्यवहार नहीं करना चाहिए।
2. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद द्वारा लिखित संस्मरण 'गोल' से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति तब आती है जब ध्यानचंद यह स्पष्ट करते हैं कि 'हॉकी का जादूगर' कहलाने का मतलब यह नहीं था कि वे सारे गोल खुद करते थे। भावार्थ – इससे पता चलता है कि ध्यानचंद में अद्भुत टीम भावना थी; वे व्यक्तिगत श्रेय की बजाय अपने साथी खिलाड़ियों को आगे बढ़ाना पसंद करते थे।
3. संदर्भ – यह पंक्ति 'गोल' संस्मरण से है, जिसके लेखक मेजर ध्यानचंद हैं। प्रसंग – यह पंक्ति बर्लिन ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने के प्रसंग में आती है, जब लेखक अपने खेलने के दृष्टिकोण को बताते हैं। भावार्थ – इसका अर्थ है कि ध्यानचंद किसी मैच की हार या जीत को

CBSEClassWorksheets

अपनी निजी उपलब्धि या असफलता नहीं मानते थे, बल्कि उसे पूरे देश के सम्मान से जोड़कर देखते थे। यह उनकी देशभक्ति और विनम्रता को दर्शाता है।

4. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद के संस्मरण 'गोल' से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति उस समय की है जब लेखक अपने सैनिक के रूप में शुरुआत से लेकर हॉकी में सुधार और सेना में पदोन्नति के सफर का वर्णन कर रहे हैं। भावार्थ – इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे उनका खेल कौशल बेहतर होता गया, उसी अनुपात में उनकी सेना में पदोन्नति भी होती गई, यानी कठिन परिश्रम का फल उन्हें निरंतर मिलता रहा।

5. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद के संस्मरण 'गोल' से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति तब आती है जब लोग उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहने लगे थे और लेखक इस उपाधि के पीछे की सच्चाई स्पष्ट करना चाहते हैं। भावार्थ – इससे पता चलता है कि ध्यानचंद अपनी सफलता का सारा श्रेय खुद नहीं लेते थे, बल्कि अपनी टीम के सहयोग और अपनी खेल भावना को महत्व देते थे।

CBSEClassWorksheets